IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

महिला सशक्तिकरण में ज्योतिबा फूले एवं सावित्री फूले के कार्यों का समालोचनात्मक अध्ययन

आरती
शोधार्थी (राजनीति विज्ञान)

डॉ. सपना गहलोत
शोध निर्देशिका
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

शोध सारांश

नारी का सशक्तिकरण एक सर्वांगीण व बहुआयामी दृष्टिकोण है। यह राष्ट्र निर्माण की मुख्य धारा में महिलाओं की पर्याप्त व सक्रिय भागीदारी में विश्वास रखता है। ज्योतिबा फूले भारत में महिला शिक्षा के अग्रदूत थे। फुले ने बालिकाओं के लिए अपना पहला स्कूल 1848 में पुणे में तात्यासाहेब भिड़े के निवास या भिड़ेवाड़ा में शुरू किया। उन्होंने, अपने अनुयायियों के साथ निचली जातियों के लोगों के लिए समान अधिकार प्राप्त करने के लिए सत्यशोधक समाज (सत्य साधकों का समाज) गठन किया। फुले ने माना कि समाज में निचली जातियाँ और महिलाएँ वंचित थीं और शिक्षा उनकी मुक्ति की कुंजी थी। सावित्रीबाई फुले को भारत की सबसे पहली स्त्रीवादी (feminist) माना जाता है, क्योंकि ब्रिटिश राज में उन्होंने स्त्रियों के शिक्षाधिकार के लिए बड़ा संघर्ष किया था। 1848 में वे भारत की पहली महिला शिक्षा बनीं और उन्होंने अपने समाज सुधारक पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर लड़कियों के लिए एक विद्यालय खोला था। पति–पत्नी ने मिलकर जाति पर आधारित भेदभाव के विरुद्ध भी काम किया था जिसके लिए उन्हें पुणे के परम्परावादी समुदायों का प्रतिरोध झेलना पड़ा था।

शोध हेतु यादृच्छिक चयन पद्धति का उपयोग करते हुए अनुभवमूलक अध्ययन हेतु विभिन्न क्षेत्रों के 600 उत्तरदाताओं से प्राप्त विवरणों व प्रतिक्रियाओं को इसमें सम्मिलित किया गया।

की वर्ड्स : महिला सशक्तिकरण, ज्योतिबा फूले, सावित्री फूले, स्त्रीवाद

प्रस्तावना

एक राष्ट्र का सर्वांगीण व समरसतापूर्ण विकास तभी संभव है जब महिलाओं को समाज में उनका यथोचित स्थान व पद दिया जाये। उन्हें पुरुषों के साथ–साथ विकास की सहभागी माना जाना जाये। सशक्तिकरण के अन्तर्गत महिलाएं अपने आर्थिक स्वावलम्बन, राजनैतिक भागीदारी व सामाजिक विकास के लिए आवश्यक विभिन्न कारकों पर पहुंच व नियंत्रण प्राप्त करती हैं। अपनी शक्तियों व संभावनाओं व योग्यताओं तथा अधिकारों व जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक होती हैं।

भारत अपने इतिहास और संस्कृति की वजह से पूरे विश्व में एक विशेष स्थान रखता है। हमारा यह देश सांस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य शक्ति आदि में विश्व के बेहतरीन देशों में शामिल है। वैसे तो आजादी के बाद देश की इन स्थितियों में सुधार की पहल हुई लेकिन हालिया समय में इस क्षेत्रों में पहल तेज हुई है। इसके लिए समाज के मानव संसाधन को लगातार बेहतर, मजबूत व सशक्त किया जा रहा है और समाज की आधी आबादी स्त्रियों की है, इस बाबत उनके लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। डॉ. अंबेडकर ने कहा था कि यदि किसी समाज की प्रगति के बारे में सही–सही जानना है तो उस समाज की स्त्रियों की स्थिति के बारे में जानो। कोई समाज कितना मजबूत हो सकता है, इसका अंदाजा इस बात से इसलिए लगाया जा सकता है क्योंकि स्त्रियाँ किसी भी समाज की आधी आबादी हैं। बिना इन्हें साथ लिए कोई भी समाज अपनी संपूर्णता में बेहतर नहीं कर सकता है। समाज की आदिम संरचना से सत्ता की लालसा ने शोषण को जन्म दिया है। स्त्रियों को दोयम दर्जे के रूप में देखने की कवायद इसी कड़ी का एक महत्वपूर्ण पहलू है। नारी सशक्तिकरण वह अवस्थिति है जिसमें महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना होता है। नारी को समाज में समानता प्रदान करना है।

सशक्तिकरण का अर्थ एक ऐसी प्रक्रिया से है जिसके तहत शक्तिहीन लोगों को अपने जीवन की परिस्थितियों को नियंत्रित करने के बेहतर अवसर मिल जाते हैं। इसका अर्थ केवल संसाधनों पर बेहतर नियंत्रण नहीं है, बल्कि इसका आत्मविश्वास में वृद्धि और पुरुषों के साथ बराबरी के आधार पर निर्णय करने की क्षमता से भी है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए आवश्यक है कि पुरुष समाज स्त्रियों के साथ होने वाले भेदभाव के बारे में जागरूक बने।

शोध समस्या का चयन

प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक महिला की स्थिति–सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से समान नहीं रही है। महिलाओं के हालातों में कई बार बदलाव हुए हैं। प्राचीन भारत में महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा प्राप्त था। परन्तु कालान्तर में सभी प्रकार की भेदभावपूर्ण प्रथाएँ बाल विवाह, देवदासी प्रणाली, नगर वधु, सती प्रथा आदि शुरू हुई हैं। महिलाओं के सामाजिक–राजनीतिक अधिकारों को कम कर दिया गया और इससे वे परिवार के पुरुष सदस्यों पर पूरी तरह से निर्भर हो गई। शिक्षा के अधिकार, काम करने के अधिकार और खुद के लिए फैसला करने के अधिकार उनसे छीन लिए गए।

समाज सुधारकों के अथक प्रयासों के बाद भी महिलाओं को आज भी समुचित स्थान समाज में नहीं मिल पाया है। इन तथ्यों को जानने की आवश्यकता महसूस हो रही है कि ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक आन्दोलनों ने महिला सशक्तिकरण के लिए जो भूमिका निभाई है उसके प्रति जागरूकता का समालोचनात्मक अध्ययन करना आवश्यक हो गया है।

समस्या कथन

किसी भी अनुसंधान कार्य में समस्या कथन का महत्वपूर्ण स्थान है। समस्या कथन शोध कार्य के शीर्षक का उल्लेख मात्र नहीं होता, बल्कि यह एक सुस्पष्ट लक्ष्य पर दृष्टि केन्द्रित करने का प्रयास करता है। समस्या के कथन के महत्व को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने अपने समस्या कथन को निम्न शब्दों में प्रतिपादित किया है–

"महिला सशक्तिकरण में ज्योतिबा फूले एवं सावित्री फूले के कार्यों का समालोचनात्मक अध्ययन"

शोध समस्या के उद्देश्य

किसी भी शोध कार्य की सफलता उसके निर्धारित किए गए उद्देश्यों पर निर्भर करती है। उद्देश्यों की स्पष्टता अनुसंधान को सरल एवं सफल बना देती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी ने निम्न शोध उद्देश्य निर्धारित किए है –

1. भारत में महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में अध्ययन करना।
2. भारत में महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में ऐतिहासिक स्वरूप को समझना।
3. ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के कार्यों का आंकलन करना जो महिला सशक्तिकरण के संदर्भ में सकारात्मक व नकारात्मक भूमिका निभाने में सक्षम रहे।
4. भारत में महिला सशक्तिकरण की समस्याओं का अध्ययन करना।
5. ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले द्वारा भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए किये गये विभिन्न प्रयासों का समालोचनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध के लिए निम्न परिकल्पना का निर्माण किया गया–

- समाज को सशक्त, विकसित और प्रगतिशील बनाने के लिए महिला सशक्तिकरण के प्रयास किये जा रहे हैं।
- महिलाओं की स्थिति सुधारने एवं महिलाओं को सशक्त करने का कार्य ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के प्रयासों द्वारा संभव हुआ है।
- ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के समाज सुधार सम्बन्धी आन्दोलनों के परिणामस्वरूप ही महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

तकनीकी शब्दों की व्याख्या

महिला सशक्तिकरण : महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिला को शक्ति सम्पन्न बनाना ताकि वह सहजता से अपने जीवन यापन की व्यवस्था कर सके।

स्नातक स्तर : वे विद्यार्थी जो उच्चमाध्यमिक स्तर के बाद महाविद्यालयों में अध्ययन करते है।

स्नातकोत्तर स्तर : वे विद्यार्थी जो स्नातक स्तर के बाद महाविद्यालयों में अध्ययन करते है।

शोध में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जोधपुर जिले के 600 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया। जिनमें से शहरी क्षेत्र के 300 विद्यार्थी और ग्रामीण क्षेत्र के 300 विद्यार्थी थे।

शोध में प्रयुक्त अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वनिर्मित एवं प्रमापीकृत प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विष्लेषण एवं व्याख्या

सारणी संख्या 1

महिला सशक्तिकरण और समाज में व्याप्त असमानता को समाप्त करने के ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के प्रयास

उत्तर विकल्प	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
सहमत	534	89%
असहमत	66	11%
योग	600	100%

स्रोत : प्रश्नावली द्वारा एकत्रित आंकड़े

परिणाम

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के विचारों को जानते हैं। ऐसे उत्तरदाता 89 प्रतिशत हैं और 11 प्रतिशत ऐसे हैं जो इनके कार्यों को नहीं जानते हैं। इस तथ्य को इस प्रकार से भी स्पष्ट किया जा सकता है कि ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के कार्यों को 89 प्रतिशत लोग आवश्यक मानते हैं और स्वीकार करते हैं कि महिला सशक्तिकरण के लिए ज्योति फूले व सावित्री फूले ने अथक

प्रयास किये। महिलाओं की स्थिति सुधारने एवं महिलाओं को सशक्त करने का कार्य ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के प्रयासों द्वारा संभव हुआ है। ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले के समाज सुधार सम्बन्धी आन्दोलनों के परिणामस्वरूप ही महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

उपसंहार

उक्त शोध परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में ज्योतिबा फूले व सावित्री फूले द्वारा चलाये गये सुधार आन्दोलनों में समय समय पर और अधिक बदलाव भी हुए हैं, और समग्र रूप से इनमें अभी भी उत्तरोत्तर सुधार हो रहे हैं और नितनये परिवर्तनात्मक निर्णय भी लिये जाते रहे हैं। परन्तु वास्तविक धरातल का अन्वेषण करें तो वर्तमान में अब भी महिलाएं पुरुषों के मुकाबले आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक क्षेत्रों में पिछड़ी हुई हैं। इनमें सामाजिक जागरूकता की कमी है। इन सुधारवादी आन्दोलनों की वर्तमान में प्रासंगिकता इसी कारण से और अधिक बढ़ती जा रही है और इनमें नये शिरे से विचार करने और परिवर्तनात्मक कदम उठाये जाने की सख्त आवश्यकता है।

संदर्भ

अग्रवाल संध्या (2008) 'शिक्षा मनोविज्ञान', अनु प्रकाशन जयपुर

गैरेट ई. हैनरी (2014) 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग', कल्याणी पब्लिकेशनस लुधियाना

कपिल, एच. के. (2004), 'अनुसंधान विधियां', हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा

कलीम, अजीम (11 अप्रेल 2020) ज्योतिराव फूले की महात्मा बनने की कहानी, *deccanquest.com.*

पारीक, मोहित (11 अप्रेल, 2018) ज्योतिबा फूले जी का आज जन्मदिन ब्राह्मण वाद के थे विरोधी थे।

भावना नायर (1989) हमारे नेता, वॉल्यूम 4, चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

के दामोदरन (1982), भारतीय चिंतन परंपरा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली

भट्टाचार्य, सब्यसाची, एड. (2002), शिक्षा और वंचितः उन्नीसवीं और बीसवीं सदी का भारत (प्रकाशन संस्करण), ओरिएंट लॉन्गमैन, हैदराबाद

घुर्ये, जीएस (1954), महाराष्ट्र में सामाजिक परिवर्तन, II. समाजशास्त्रीय बुलेटिन